IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय राजनीति में महात्मा गाँधी के अभ्युदय के पश्चात् कोशी कमिश्नरी के स्वतंत्रता सेनानियों का स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान

डा0 रत्नेश कुमार

भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में जाना जाता है। महात्मा गाँधी का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विवादहीन नेता के रूप में प्रादुर्भाव अपने आप में एक दिलचस्प कहानी है। भारतीय लोगों के लिए उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में जो संघर्ष किया वो सर्वविदित है। सत्याग्रह के उनके अनूठे तरीके के अच्छे परिणाम निकले थे। काँग्रेस के दिग्गजों ने उनके चरित्र और संगठन क्षमता के बारे में ऊँची धारणा बनाई थी। दक्षिण अफ्रीका में रंग–भेद के खिलाफत के दौरान उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन के दर्शन का विकास किया था। उनका मानना था कि यदि सत्याग्रह अफ्रीका में सफल हो सकता है तो क्यों नहीं उसकी आजमाइश भारत में की जाय और उसका पहला प्रयोग उन्होंने उत्तरी बिहार के चम्पारण में किया। इस प्रयोग में वे सर्वथा सफल ही नहीं रहे बल्कि इस प्रयोग के कारण पूरा देश उनकी ओर मुखातिब हुआ। फलतः भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा मिली। स्वतंत्रता आंदोलन पर इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि शक्तिशाली ब्रिटिश प्रशासन को उन्होंने झकझोर दिया जिसकी परिणीति हमें आजादी के रूप में देखने को मिली।

वस्तुतः भारतीय राजनीति में मोहनदास करमचन्द्र गांधी का 1915 में हुआ। गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका में किए गये कार्यों से ही भारतीय लोग उनके क्रियाकलापों से सुपरिचित हो गए थे। साथ ही जनमानस की आकांक्षाएं उनसे बढ़ सी गई थी। मतलब स्पष्ट है कि गांधी जी अपने संघर्षशील व्यक्तित्व के कारण पूरे भारत में काफी लोकप्रिय थे। भारतीय नेताओं में वे केवल गोपाल कृष्ण गोखले के संपर्क में आए थे और अंत–अंत तक वे उन्हें ही गुरु मानते रहे। गोखले ने ही गांधी जी को भारत आने और भारतीय राजनीति में भाग लेने की प्रेरणा दी और उसके लिए आग्रह भी किया।

गांधी जी भारत पदार्पण के बाद एक वर्ष तक भारत के शहरों, कस्बों में घूम–घूम कर भारतीय जनता की जीवन दशाओं का अध्ययन करते रहें, तथा भारत में अंग्रेजी प्रभाव को आंकते रहे। शोध से हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वस्तुतः गांधी जी भारतीय राजनीति में पैर रखने से पूर्व भली–भांति उसका अध्ययन करना चाहते थे। चूँकि उनके मन में स्वतंत्रता की घोर ललक थी। पराधीन राष्ट्र का नागरिक बन कर रहना उनके जैसे व्यक्ति के लिए नागवार था। इसलिए अपनी गहरी अभिरुचि जहाँ की परिस्थिति में दिखलाई।

इसी का प्रतिफल था कि 1916 ई0 के काग्रेंस अधिवेशन में बिहार के चम्पारण में आने का आग्रह किया गया। दिसंबर 1916 ई0 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में मोहनदास करमचंद गांधी के चम्पारण (बिहार) आने की पृष्ठभूमि तैयार हुई। अफ्रीका से लौटने के बाद गांधी जी ने भारत के नवोदित राष्ट्रवाद का सफल प्रयोग चम्पारण में किया। यह पहला प्रयोग अहिंसा, सत्य एवं शोषित–दलित जनसमूह के जागरण के कारण महत्वपूर्ण माना जा सकता है। चम्पारण के साथ–साथ बिहार में जहाँ –जहाँ नील की खेती होती थी वहाँ अन्याय एवं भयंकर शोषण होता था। नील की खेती के क्रम में गोरे निलहे साहब (अंग्रेज) लाभ कमाने के लिए रैयतों का शोषण 'जीरात' या 'आसामीवार' प्रथा के अन्तर्गत किया करते थे।

1. पूर्णियाँ एवं सहरसा क्षेत्र में भी नील की खेती होती थी।
2. चम्पारण में महात्मा गाँधी के क्रियाकलाप से क्षेत्र के लोगों में आंदोलन के प्रति चेतना तथा आस्था उत्पन्न हुआ। क्योंकि बाद के वर्षों में सीमांचल क्षेत्र गाँधी जी के आह्वान पर काफी सक्रिय रहा।

1920 ई0 में कोलकाता के विशेष अधिवेशन 'सितंबर' द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने महात्मा गाँधी द्वारा असहयोग प्रस्ताव पर स्वीकृति प्रदान की। असहयोग के अंतर्गत सरकारी उपाधियों को लौटाना, बहिष्कार जिसमें परिषद्, कचहरी एवं शिक्षण संस्थान को महत्वपूर्ण माना गया, एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि पर बल दिया गया।

3. बिहार के साथ–साथ सीमांचल में भी असहयोग आंदोलन के विभिन्न पहलुओं का कार्यरूप दिया गया जिसका पता सहरसा जिले के स्वतंत्रता सेनानीयों के इतिहास से चलता है (मयानंद मिश्र द्वारा संग्रहित अप्रकाशित सहरसा 'सुपौल–मधेपुरा सहित जिला स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास के लिए विभिन्न सेनानियों की जीवनी) इतना ही नहीं सीमांचल पूर्णियाँ में हम असहयोगियों को उत्तेजना में भी पाते हैं जब वे हाट लूटने लगते हैं।
4. असहयोग आंदोलन के चलते सहरसा के राजेंद्र मिश्र ने जो कोलकाता में पढ़ाई कर रहे थे, पढ़ना छोड़ दिया। गंगा प्रसाद सिंह, पटना ट्रेनिंग कॉलेज छोड़ा।
5. बारिस लाल मंडल खजूरी–सहरसा मिठाई प्राइमरी स्कूल के शिक्षक पद छोड़ दिया। 1922 ई0 में परसरमा में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई। गंगा प्रसाद का जन्म सहरसा जिले के बारूआरी गाँव में हुआ था। 1920 ई0 में इन्होंने पटना ट्रेनिंग कॉलेज की पढ़ाई महात्मा गांधी के आह्वान पर छोड़ी। पटना सदाकत आश्रम में राजेंद्र प्रसाद और अनुग्रह नारायण सिंह के नेतृत्व में कार्य किया एवं इनके साथ देवघर गये, जहाँ शशिभूषण राय के संपर्क में आये। 1921 ई0 में प्रचार कार्य करते हुए राजमहल में गिरफ्तार किये गये। बाद में सहरसा क्षेत्र के आंदोलनों में सक्रिय रहे।

नन्दन शाह का जन्म 1902 ई0 भपटियाही (सुपौल जिला) के जग्गू साह के पुत्र के रूप में हुआ। भपटियाही नेपाल का सीमावर्ती क्षेत्र है। इनका निवास स्थान स्वतंत्रता सेनानियों का प्रमुख अड्डा था जिनको खाने खिलाने की जिम्मेदारी नंदन साह की पत्नी गौरी देवी पर थी। सीतापुर गाँव (वीरपुर) के देवीलाल देव सुपौल विलियम्स उच्च विद्यालय से इन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की तथा 1924 ई0 में रेलवे विभाग में टिकट संग्राहक के रूप में नियुक्त हुए किन्तु थाना विहपुर से अंग्रेजों द्वारा कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर अत्याचार तथा राजेंद्र प्रसाद के भाषण से प्रभावित होकर नौकरी छोड़ दी। बाद में (1935–39 ई0) ये राजेंद्र मिश्र द्वारा बसावनपट्टी (राघोपुर–सहरसा) में स्थापित राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षक रहे तथा 1942 ई0 की क्रांति में गिरफ्तार हुए।

बारीशलाल मंडल के पिता का नाम फुनगुनी मंडल था। 1930 में बारीशलाल मंडल ने मिठाई प्राइमरी के शिक्षक की नौकरी छोड़ी एवं तथा मिठाई कलाली बन्द करते हुए गिरफ्तार हुए। 1932 ई0 में मुठिया वसूलने स्वयंसेवकों को आजादी के लिए तैयार करने आदि के कारण पनः गिरफ्तार हुए। 1942 ई0 की भारत छोडो

क्रांति के क्रम में लूट–पाट, तोड़–फोड़ के कारण ये गिरफ्तार नहीं किये जा सके, किन्तु इनके पिता को पीटा गया एवं घर जलाया गया। राजेंद्र मिश्र द्वारा बसावन पट्टी (राघोपुर) में राष्ट्रीय सेनानी बने। देवीलाल देव (वीरपुर–सुपौल) रेलवे की नौकरी छोड़कर 1935 ई0 से 1939 ई0 तक विद्यालय में कार्य किए। सुपौल में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया। कुनौली बाजार में विदेशी वस्त्रों को जलाया गया, जिसमें नंदन साह (भपटियाही) भी सम्मिलित था। समझा जाता है कि राजेंद्र मिश्र एवं खूबालाल महतो के द्वारा योजना बनाई जाती थी। नंदन साह डंगमरा थाना एवं कुनौली में सक्रिय सेनानी थे इन्होंने दो बार घर पर कांग्रेसी झंडा लगाया था जिसे पुलिस ने उतरवा दिया (नंदन साह की जीवन में उद्धृत)

शिवनंदन प्रसाद मंडल (मधेपुरा) एवं राजेंद्र मिश्र द्वारा सहरसा में एक राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई। इस विद्यालय में भागवत पोद्दार (अतलखा), जमुना प्रसाद सिंह (परसरमा) आदि अवैतनिक शिक्षक थे। इस समय (लगभग 1920 ई0) सहरसा में एक क्रिश्चिन मिशन स्कूल जिसकी स्थापना 1906 ई0 में हुई थी, वर्तमान था। किन्तु कई छात्रों ने मिशन स्कूल से नाम कटवाकर राष्ट्रीय विद्यालय में दाखिला लिया। छात्रों में चित्रनारायण शर्मा, मंजर आलम आदि प्रमुख थे जो बाद में स्वतंत्रता सेनानी बने। दूर–दराज के गाँवों में भी कांग्रेस संगठन एवं असहयोग आंदोलन का कार्यक्रम चला। बनैनिया (किशनपुर) में एक ग्राम टोली बनी जो एक पिछड़ा गाँव था। इस ग्राम टोली में विभिन्न जातियों एवं धर्मों के लोगों ने हिस्सा लिया। जैसे ग्राम टोली में भैयालाल विश्वास (वैश्य), चुन्टी ठाकुर (धानुक), अवध नारायण झा (ब्राह्मण), लक्ष्मीकात मिश्र, अच्छेलाल झा, बाबूनन्द मिश्र, विश्वनाथ मिश्र, बौकू साह, राजेश्वर मंडल (यादव), सुंदर मंडल, रहमान मियां, जवानअलि मियां, हितो साह, कैलाश बिहारी मिश्र आदि थे। राम बहादुर सिंह पंचगछिया (सहरसा) के भूमिपति थे। उन्होंने 1920 के असहयोग आंदोलन का नेतृत्व किया एवं बाईस महीनों की सजा पाई। 1901 ई0 में सहरसा से 12 किलोमीटर उत्तर पंचगछिया में रामबहादुर सिंह का जन्म एक संपन्न राजपूत परिवार में हुआ था। इनके पिता बबुआ सिंह मधेपुरा सबडिवीजन कोर्ट के मुख्तार थे। शोषितों, पीड़ितों के सत्त कल्याण के लिए बबुआ सिंह ने अपने गाँव में धर्म बरवारी (अनाज संग्रह) की स्थापना की थी जिससे जरूरत मंद लोगों को अन्न दिया जाता था। मुख्तार साहब की लाइब्रेरी में जहाँ कानून की किताबें थी वहीं आर्य समाज, प्रार्थना समाज, राजा राममोहन राय, विवेकानंद, तिलक, गोखले आदि के साहित्य आदि से संबंधित साहित्य भी थे। राम बहादुर सिंह को सुधारवादी एवं प्रगतिशील विचारधारा विरासत में मिली थी।

1919 ई0 से पूर्णियाँ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रमों को अमल किया गया। पूर्णियाँ के कुछ डेलीगेट ने नागपुर के 1920 ईस्वी के कांग्रेस महाधिवेशन में भाग लिया एवं यहाँ के कुछ बोलेन्टियर के नागपुर अधिवेशन में उपस्थित हुए। पूर्णियाँ के स्थानीय नेताओं में गोकुल कृष्ण राय, सत्येंद्र नारायण राय तथा अन्य कुछ लोगों ने अपना वकालत छोड़कर आंदोलन में हिस्सा लिया। पूर्णियाँ के युवा बोलेन्टियरों ने काफी सक्रिय भूमिका निभाई। 1921 ईस्वी में कटिहार राष्ट्रीय विद्यालय का स्थापना की गई 1921 ईस्वी में देशरत्न राजेंद्र प्रसाद ने पूर्णियाँ एवं अन्य जगहों पर सभा को संबोधित किया। जल्द ही आंदोलन सर्वसाधारण एवं संपूर्ण जिला में फैल गया। सरकारी संस्थाओं के बहिष्कार की भावना के अंतर्गत छोटे किसानों (कर देनेवाले) ने विभिन्न सरकारी संस्थाओं एवं शराब दुकानों का बहिष्कार किशनगंज में किया। गाँव भी विदेशी सामानों एवं विदेशी कपड़ों के बहिष्कार में तत्पर रहा। गोकुल कृष्ण पूर्णियाँ जिले (दीवान गंज) के एक जमींदार परिवार में जन्मे तथा ये एम0 ए0 बी0 एल0 थे। सन् 1930 में जिला कांग्रेस के सभापति तथा नमक सत्याग्रह के प्रथम ''जिला सरकार'' निर्वाचित हुए। इनकी पत्नी सत्यवती राय ने बराबर इनका साथ दिया। इनके नाम पर जिला कांग्रेस पूर्णियाँ का मुख्यालय गोकुल कृष्ण आश्रम है।

सत्येंद्र नाथ राय धूलियान (बंगाल) से आकर पूर्णियाँ में बसे। आंदोलन के क्रम में इनका एकमात्र पुत्र उनके जेल से रहते गुजर गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ये नवंबर 52 से 57 ईसवी तक जिला परिषद् के अध्यक्ष रहे। बाद में बीमार पड़ने पर चिकित्सा के लिए कोलकाता गये जहाँ उनकी मृत्यु हुई।[5]

कहा जा सकता है कि कोशी कमिश्नरी का पूर्णियाँ जिला एवं सहरसा (उत्तरी भागलपुर) किसी भी अन्य जिला से असहयोग आंदोलन में पीछे नहीं रहा। प्रेमसुन्दर बोस के नेतृत्व में लगभग चालीस छात्रों ने अपने कॉलेजों का बहिष्कार करके अपने क्षेत्रों में 1921 ईस्वी में भागलपुर से जाकर कांग्रेस की नीतियों का प्रचार किया। (उस समय भागलपुर जिला में कांग्रेस पार्टी मजबूत था) दीप नारायण सिंह भागलपुर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के कांग्रेसी चेयरमेन निर्वाचित हुए। (भागलपुर एवं उसके सबडिवीजन मधेपुरा (सहरसा) के संबंध में पी0 सी0 सम्पाचौधरी (सम्पा0) बि0 डि0 ग0 स0 (पृष्ठ 43–44) में उल्लेख है) 1942 ई0 के असहयोग आंदोलन में सरकारी सेवा से त्याग–पत्र दिया था। पूर्णियाँ जिला में लगभग 54 शहीदों की जानकारी मिलती है। (परमेश्वर गोयल, सम्पा0, भागीरथी, भागीरथी मंडल गुलाबबाग, अगस्त 1986 ई0 पृ0 64) उदाकिशुनगंज (मधेपुरा) के खूबलाल राय ने असहयोग आंदोलन के कारण 1920 ईस्वी में पढ़ाई छोड़कर अपने साथियों जैसे यदुनंदन झा, सिंघेश्वर मंडल, कुलानंद सिंह, नंदलाल मंडल आदि के साथ जगह–जगह सभाएं की। दीपनारायण सिंह (बिहार केसरी), द्वारा 1921 ईस्वी में मधेपुरा के रजनी बभनगामा गाँव में तिलक राष्ट्रीय विद्यालय स्वतंत्रता सेनानियों का प्रशिक्षण केंद्र बना। उत्तरी भागलपुर (सहरसा) के स्वतंत्रता आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने वाले शिवनंदन प्रसाद मंडल ने असहयोग आंदोलन के क्रम में अपनी वकालत छोड़ दी। (मयानंद मिश्र द्वारा संग्रहित (अप्रकाशित) रजनी बभनगामा के महाराज जी उर्फ बाबू जी दास एवं फलकित लाल दास ''मयूर'' ने भी इस आंदोलन में भाग लिया। 1918 इसवी में अररिया (पूर्णियाँ) उच्च विद्यालय के उपचार्य पद पर नियुक्त फण्यानन्द झा महात्मा गाँधी के आह्वान पर त्याग–पत्र देकर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े और पूर्णियाँ में बिहार गवर्नर के बहिष्कार हेतु निकाले गए जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस की लाठियाँ खाई रामदेवी तिवारी ''द्विज देनी'' के साथ मिलकर फारबिसगंज में एक राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की और उसके शिक्षक हुए। पूर्णियाँ में असहयोग आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करते हुए ''द्विवज देनी'' जी ने अनेक राष्ट्रीय गीत लिखें जो जनता में काफी लोकप्रिय हुए। 1942 ईस्वी के भारत छोड़ो आंदोलन के क्रम में 'द्विवजदेनी'' जी जेल भी गये। वे भागलपुर केंद्रीय जेल में रखे गए जहाँ इनकी मृत्यु हो गई। कोढ़ा थाना (पूर्णियाँ) के अम्बिका प्रसाद चौधरी ने भी असहयोग आंदोलन में महत्वपूर्ण रूप से हिस्सा लिया। मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र किशनगंज (पूर्णियाँ) में खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन में शराफत अली, शमशेर अली, जहान अली मस्तान आदि काफी सक्रिय रहे। फण्यानन्द झा जहानपुर–अररिया (पूर्णियाँ) के हित नाथझा के पुत्र थे। इनका जन्म 1898 ईसवी में हुआ था। इलाहाबाद के पाठशाला में इन्ट्रेन्स करने के बाद वहीं के क्रिश्चियन कॉलेज से इंटरमीडिएट और कोलकाता विश्वविद्यालय से बी0 ए0 की डिग्री प्राप्त की। 1952 ईस्वी में बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

संदर्भ

1. बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, पृ0–182–206
2. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सहरसा, पृ0– 110
3. क्रॉनिकल हिस्ट्री ऑफ बिहार, पृ0– 340–42
4. मॉडर्न इंडिया, पृ0– 219–28
5. बिहार डिस्ट्रिक गजेटियर, पूर्णियाँ, पृ0–103
6. बिहार के आंदोलन का इतिहास, पृ0– 84–86
7. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ पृ0–554–572
8. भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, संवैधानिक विकास एवं भारतीय संविधान, पृ0– 8–9
9. बिहार डिस्ट्रिक गजेटियर, पूर्णियाँ पृ0– 77–78
10. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णियाँ पृ– 229